HISTORY

1

आइन-ए-अकबरी की रचना तथा इसका अनुवाद (Compilation of Ain-i-Akbari and its Translation)

लोगों तथा अधिकारियों द्वारा अकबर के सरकारी पत्रों को नष्ट कर दिया गया परन्तु आइन-ए-अकबरी ने इस कमी को बहुत सीमा तक पूरा किया है। ब्लॉचमैन तथा जैरेट (Jarret) ने इस पुस्तक का अनुवाद कर के इसे यूरोपीय विद्यार्थियों पहुंचाया तथा यह अनुवाद उतना ही उपयोगी है जितनी की फारसी में लिखी हुई मूल रचना। अनुवादकों, विशेषतौर पर ब्लॉचमैन के पुस्तक के प्रथम खण्ड में दी हुई टिप्पणियों से यह पुस्तक और भी उपयोगी हो गई है। ब्लॉचमैन ने आइन-ए-अकबरी का प्रथम खण्ड 1873 ई० तथा दूसरा खण्ड 1891 कोलकता से प्रकाशित किया। तीसरे खण्ड का एच० एस० जैरेट ने 1894 ई० में अनुवाद किया।

ब्लॉचमैन तथा जैरेट के प्रयत्नों से वारेन हेस्टिंग्स के काल में ग्लैडविन द्वारा लिखित पुस्तक में संशोधन हुआ। ग्लैडविन की यह रचना 1785 ई० में गवर्नर जनरल को समर्पित की गई तथा 1800 ई० में यह लंदन में छापी गई।

- अन्य स्रोत (other sources)

आइन-ए-अकबरी के अतिरिक्त, हमारे पास 16 वीं तथा 17 वीं शताब्दी भारतीय तथा विदेशी विद्वानों द्वारा मुगल प्रबंध के ढाँचे के लिखे गए वृतांत जैसे कई अन्य समकालीन स्रोत हैं। इनमें प्रमुख हैं:

- ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद अथवा निजामी (Khwaja Nizamuddin Ahamad or Nizami)

निजामुद्दीन अहमद अकबर के दरबार में सरकारी इतिहासकार था। इसने तबकात-ए-अकबरी (Tabkat-i-Akbari) की रचना की। यह नौ भागों में विभाजित है। पहले दो भागों में सल्तनत-ए-दहली और मुगलों का वृतांत है तथा अन्य भागों में तत्कालीन प्रांतीय भागों (दक्कन, गुजरात, मालवा, बंगाल, सिंध, मुलतान आदि) का वर्णन किया गया है। इसके लेखन में अकबरनामा, आइने अकबरी सहित अन्य 28 ग्रंथों का सहारा लिया गया। यह भी उस समय के दरबारी इतिहास का एक उदाहरण है। यह सम्राट अकबर का शासन काल का अधिकृत वृतांत है। परंतु इसका तिथिक्रम दोषपूर्ण है।

- मुल्ला अब्दुल कादिर बदायूँनी

(Mulla Abdul Kadir Badaoni)

'अब्दुल कादिर बदायूँनी' अकबर के दरबार में एक प्रसिद्ध समकालीन इतिहासकार था। वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था। इसकी रचना 'मुंतखब-उत-तवारिख' (The-Muntakhab-Twarikh) अकबर के शासन काल के संबंध में कट्टर सुन्नी दृष्टिकोण से लिखा गया वृतांत है। वह अकबर के उदारवादी दृष्टिकोण को भली-भांति समझ सकता था। इस पुस्तक में चाहे कुछ दोष हैं फिर भी यह बहुत रोचक है। इस पुस्तक का अंग्रेजी में अनुवाद भी उपलब्ध है तथा यह अबुल फजल के अकबरनामा में अकबर की अत्यधिक प्रशंसा की आलोचना करता है।